शिवस्तुति ।

नमामीश मीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं ॥

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाश्वासं भजे ऽ हं ॥

निराकारमोंकार मूलं तुरियं । गिरा ज्ञान गोतीत मीशं गिरीशं ॥

करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतो ऽ हं ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरंगभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥

स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालभालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥

मृगाधीषा चर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंड अजं भानु कोटि प्रकाशं ॥

त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणि । भजे हं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सच्चिदानन्द दाता पुरारी ॥

चिदानंद संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥

ना यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भंजतीह लोके परे वा नराणां ॥

ना तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासं ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतो ऽ हं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥

जरा जनम दुःखौध तातव्यमानं । प्रभोपाहि आपन्न मामीश शंभो ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतेषय । ये पठन्ति नरा भक्त्यातेषा शम्भूः प्रसीदति ॥